जन्माष्टमी में दिखा कृष्ण की बाल लीलाओं का रूप

श्रीकृष्ण जैसा गुणधारी बनें-दादी रतनमोहिनी

आबू रोड, 3 सितम्बर, निसं। शांतिवन में पांच स्टालों में सजाये गये जन्माष्टमी पर्व पर श्रीकृष्ण की सभी बाल लीलाओं का रूप देखने को मिला। लाईट और साउण्ड से सजे इस पंडाल को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। विधिवत सजाये गये इस झांकी की उदघाटन अवसर पर बोलते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि श्रीकृष्ण सतोप्रधान थे। वे सतयुग के पहले श्रीराजकुमार थे। मनुष्य को उनके जैसा ही गुणधारी बनने की इच्छा रखना चाहिए। इस तरह की इच्छा रखने से श्रीकृष्ण के सभी मूल्य आत्मसात करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने उपस्थित लोगों से अपील करते हुए कहा कि यह पर्व केवल मनाने के लिए नहीं बल्कि उनके जैसा गुणधारी बनने का है। इसलिए जिस तरह से उन्होंने सभी विकारों से मुक्त सतोप्रधान बने। ऐसे हमें भी बनने का प्रयास करना चाहिए। संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वैर ने कहा कि हमारा लक्ष्य सदैव श्रीकृष्ण जैसा बनने का होना चाहिए। जब दुनियां के सभी मनुष्य यह मन में यह निश्चय कर ले कि हमें ऐसा ही बनना है तो उनके मूल्य सहज ही हमारे अन्दर आने लगते हैं। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी ने सभी से धूमधाम मनाने की आह्वान किया। इस अवसर पर जनसम्पर्क एवं सूचना निदेशक ब्र0 कु0 करूणा तथा शांतिवन प्रबन्धक ब्र0 कु0 भूपाल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर आबू रोड तथा आस-पास से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हो रहे थे। रात्रि कालीन भव्य झांकी का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। इसमें प्रथम स्टाल में यज्ञ कुण्ड में विकारों की आहुति तथा ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ज्ञानअमृत के पान का दृश्य। दूसरे स्टाल में धर्मराजपुरी, चित्रगुप्त द्वारा धर्मराज को पाप आत्माओं और पुण्य आत्माओं का लेखा, जोखा तथा पाप आत्माओं को यमदूतों द्वारा सजा का दृश्य। तीसरे स्टाल में श्रीकृष्ण बाल लीलाओ का वर्णत झूले सहित। चौथे स्टाल में लक्ष्मी नारायण तथा उनके राज परिवार का दृश्य तथा पांचवे स्टाल में पृथ्वी को हानिकारक ग्रहों से बचाने तथा गलोबल वार्मिग पर दृश्य दर्शाया गया है। सजीव झांकी देखने लोगों का हुजुम देर रात तक उमड़ता रहा। सुरक्षा व्यवस्था के साथ दर्शकों को देखने की सुचारू रूप से यवस्था की गयी थी। हर बीस मिनट पर पर्दे उठाये का प्रावधान था जिससे लोगों को उनका दर्शन हो सके।

फोटो, 3एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5 उदघाटन अवसर पर बोलते दादी रतनमोहिनी, पंडालों में सजाये गये कृष्ण की बाल लीलाओं का रूप।